

डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ इकसठ

बाइबल की भविष्यवाणी के दर्शन की स्थापना में रोम की भूमिका: दानियेल अध्याय ग्यारह का विस्तृत अध्ययन

Jeff Pippenger

2024-03-27

दानियेल के अध्याय ग्यारह का दर्शन, बाइबल की भविष्यवाणी के सभी दर्शनों के लिए मुख्य संदर्भ बिंदु है, और अध्याय ग्यारह का यह दर्शन रोम के प्रतीक द्वारा स्थापित है।

और उन दिनों में बहुत-से लोग दक्षिण के राजा के विरुद्ध उठ खड़े होंगे; और तेरे लोगों में से लुटेरे भी दर्शन को स्थिर करने के लिए अपने आप को ऊँचा करेंगे; परन्तु वे गिर पड़ेंगे। दानियेल 11:14.

जोन्स पिछले श्लोक पर इस प्रकार टिप्पणी करते हैं:

जब अमोरियों ने अपने अधर्म का परिमाण भर लिया, तो उनका स्थान परमेश्वर की प्रजा इस्राएल को दे दिया गया। जब इस्राएल ने भी अन्यजातियों के मार्ग का अनुसरण करते हुए अधर्म का प्याला भर लिया, तब परमेश्वर ने बाबुल का राज्य उठा खड़ा किया और सब कुछ उनसे ले लिया। जब बाबुल ने अपने अधर्म का प्याला भर लिया, तब सत्ता पारस को हस्तांतरित कर दी गई। और जब पारसियों की दुष्टता के कारण स्वर्गदूत हट गया, तब यूनान का प्रधान आकर उसे भी उखाड़ फेंकता है।

और यूनान की शक्ति कितने समय तक बनी रहने वाली थी? वह कब टूटनी थी? 'जब अधर्मियों का अधर्म परिपूर्ण हो जाएगा।' वह राष्ट्र तब तक बना रहता है जब तक वह अपने अधर्म का परिमाण पूरा नहीं कर लेता, और तब वह शक्ति किसी अन्य राज्य को स्थानांतरित कर दी जाती है। जिस शक्ति को यह स्थानांतरित हुई, वह रोमी थी, जैसा कि हम दानियेल 11:14 से जानते हैं। 'और उन दिनों में बहुत से लोग दक्षिण के राजा के विरुद्ध उठ खड़े होंगे; और तेरे लोगों के लुटेरे भी दर्शन को स्थापित करने के लिए अपने को ऊँचा उठाएँगे; परन्तु वे गिर पड़ेंगे।' इस राष्ट्र को एक लुटेरों का राष्ट्र - लुटेरों की संतान - के रूप में दिखाया गया है, जैसा कि पाठ के हाशिये में कहा गया है।

"ये वे लोग हैं जिन्हें अब राज्य दिया गया है, और किस उद्देश्य से? — 'लुटेरों की संतानें दर्शन को स्थापित करने के लिए स्वयं को ऊँचा उठाएँगी।' जब यह राष्ट्र परिदृश्य पर उभरता है, तब वह तत्व प्रवेश करता है जो दर्शन को स्थापित करता है, जो उस दर्शन का एक महान उद्देश्य है, दर्शन की रेखा में वह प्रधान मील का पत्थर है जिसे परमेश्वर ने सदैव के लिए भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से दिया है।" ए. टी. जोन्स, कोलंबियन वर्ष और चार सदियों का अर्थ, 6.

जोन्स कहते हैं कि जब रोमी शक्ति "दृश्य पर आती है, तब वह प्रवेश करता है जो स्थापित करता है" ... "वह दृष्टि-रेखा जो परमेश्वर ने समस्त काल के लिए भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से दी है"। मिलर के इतिहास में प्रोटेस्टेंटों ने, जैसा कि अब लौदीकिया एडवेंचर भी करता है, यह सिखाया कि तेरे लोगों के लुटेरे एंटियोकस एपिफेनीज़ का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो 175 से 164 ईसा पूर्व तक शासन करने वाला एक सेल्यूसीड राजा था। वह सेल्यूसीड वंश का सदस्य था, जो सिकंदर महान के साम्राज्य के विघटन से उत्पन्न यूनानी उत्तराधिकारी राज्यों में से एक था। इस मुद्दे पर असहमति मिलराइट इतिहास में इतनी विशिष्ट थी कि एंटियोकस एपिफेनीज़ की पहचान 1843 के पायनियर चार्ट पर दर्शाई गई है।

चार्ट पर अन्तियुखुस का उल्लेख उस एकमात्र ऐसी वस्तु का उल्लेख है जो परमेश्वर के भविष्यवाणी-संबंधी वचन में नहीं पाई जाती। वह वहाँ उस काल के प्रोटेस्टेंटों की झूठी शिक्षाओं का खण्डन करने के लिए है, जो अब लौदीकियाई

ऐडवेंटिज़्म की झूठी शिक्षा है। क्या विलियम मिलर ने इस बात के महत्त्व की गहराई को समझा था कि रोम ही वह सांसारिक शक्ति है जो “उस दृष्टि की रेखा को स्थापित करती है जिसे परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा सब समय के लिए दिया है,” यह सन्देशास्पद है; परन्तु यह तथ्य दृढ़तापूर्वक प्रतिपादित करने के लिए पर्याप्त रूप से स्पष्ट था कि रोम ही उस दृष्टि को स्थापित करता है।

जहाँ दर्शन नहीं होता, वहाँ प्रजा नाश होती है: परन्तु जो व्यवस्था का पालन करता है, वह सुखी है। नीतिवचन 28:14.

सुलैमान ने लिखा कि जहाँ दर्शन नहीं होता, वहाँ लोग नाश हो जाते हैं, और चौदहवीं आयत में “दर्शन” के लिए जो हिब्रू शब्द है, वह सुलैमान की कहावत वाले शब्द के समान ही है। यह दर्शन जीवन-मृत्यु का प्रश्न है, और यह “दर्शन” रोम के प्रतीक द्वारा स्थापित किया गया है। चौदहवीं आयत में “दर्शन” के लिए जो शब्द है, वही हबक्कूक अध्याय दो में “दर्शन” के लिए प्रयुक्त शब्द है।

मैं अपने पहरे पर खड़ा रहूँगा, और मीनार पर अपना स्थान लूँगा, और यह देखने के लिए चौकस रहूँगा कि वह मुझसे क्या कहेगा, और जब मुझे ताड़ना दी जाए तब मैं क्या उत्तर दूँगा। और प्रभु ने मुझे उत्तर दिया और कहा, दर्शन लिख, और उसे पट्टिकाओं पर स्पष्ट लिख दे, ताकि उसे पढ़ने वाला दौड़ सके। क्योंकि यह दर्शन अभी नियत समय के लिए है, परन्तु अंत में यह बोलेगा, और झूठ न बोलेगा; यदि यह देर करे, तो उसकी प्रतीक्षा कर; क्योंकि वह निश्चय ही आएगा, वह देर न करेगा। हबक्कूक 2:1-3.

पहले पद में "reproved" शब्द का अर्थ "उससे बहस की गई" है। पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के आंदोलन के इतिहास में विलियम मिलर वह प्रहरी था जिसे मीनार पर नियुक्त किया गया था, और जब भविष्यदर्शी प्रतीकवाद में उसने पूछा कि अपनी इतिहास-संबंधी बहस में उसे क्या उत्तर देना चाहिए, तो उसे दर्शन लिखने को कहा गया, जो रोम के प्रतीक द्वारा स्थापित है। इस तथ्य के अनुरूप, जब मिलेराइट्स ने हबक्कूक की इन तीन आयतों की पूर्ति में 1843 का प्रारंभिक चार्ट प्रकाशित किया, तो उन्होंने उस बहस के बिलकुल केंद्र का संदर्भ दिया जिसमें वे संलग्न थे। निस्संदेह, वे यह नहीं समझते थे कि यह कहकर—कि Antiochus Epiphanes वह शक्ति था जिसने उस दर्शन की स्थापना की—उस मूर्खतापूर्ण तर्क का उनका संदर्भ देना, हबक्कूक अध्याय दो की बहस का प्रतिनिधित्व करता है; परंतु सिस्टर व्हाइट ने कहा कि वह चार्ट "प्रभु के हाथ से निर्देशित था और उसमें परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए", इसलिए उस चार्ट पर बहस का जो संदर्भ था, वह परमेश्वर के हाथ से था।

मिलेरियों ने यह ठीक प्रकार से समझ लिया कि 19 अप्रैल, 1844 की पहली निराशा ने उस विलंब के समय का आरंभ किया था, जिसका उल्लेख हबक्कूक में और साथ ही मत्ती के दस कुँवारियों के दृष्टान्त में किया गया है। उन्होंने यह भी समझ लिया कि वे दोनों भविष्यवाणियाँ सीधे यहजेकेल अध्याय 12 से संबंधित थीं, जहाँ यहजेकेल उस समय-अवधि की पहचान करता है जिसमें प्रत्येक दर्शन का प्रभाव घटित होगा। “दर्शन” शब्द वही इब्रानी शब्द है जिस पर हम अभी विचार कर रहे हैं। यही कारण है कि जोन्स सही है जब वह कहता है, “जब” रोम “दृश्य पर आता है, तब वह प्रवेश करता है जो दर्शन को स्थापित करता है, वह जो दर्शन का एक महान विषय है, दर्शन की उस रेखा में एक मुख्य प्रधान चिन्ह, जिसे परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा सर्वकाल के लिए दिया है।” रोम परमेश्वर के भविष्यद्वक्तापूर्ण वचन के संपूर्ण दर्शन को स्थापित करता है, और अधिक विशेष रूप से, अध्याय 11 की संपूर्ण संरचना रोम पर ही निर्मित है।

जब सिस्टर व्हाइट दानिय्येल के ग्यारहवें अध्याय की अंतिम पूर्ति का उल्लेख करती हैं और कहती हैं कि “इस भविष्यद्वक्तापूर्ण की पूर्ति में जो इतिहास घटित हो चुका है, उसका बहुत-सा भाग फिर से दोहराया जाएगा,” तब वे यह इंगित कर रही होती हैं कि ग्यारहवें अध्याय के वे इतिहास, जो पहले ही पूरे हो चुके थे, दानिय्येल अध्याय ग्यारह के अंतिम पदों के प्रतिरूप थे। ग्यारहवें अध्याय के अंतिम पदों का विषय उत्तर का राजा है, जो वहाँ आधुनिक रोम का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दानिय्येल अध्याय ग्यारह के वे इतिहास, जो दोहराए जाते हैं, ऐसे इतिहास हैं जो रोम का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अध्याय ग्यारह की अंतिम छह आयतों में, आधुनिक रोम (उत्तर का राजा) तीन भौगोलिक शक्तियों को परास्त करता है। आयत चालीस में वह दक्षिण के राजा (1989 में भूतपूर्व सोवियत संघ), महिमामय देश (शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय संयुक्त राज्य अमेरिका), और मिस्र (संपूर्ण विश्व, जिसका प्रतिनिधित्व संयुक्त राष्ट्र करता है) पर विजय प्राप्त करता है। दानिय्येल अध्याय ग्यारह में मूर्तिपूजक रोम को उस समय के ज्ञात संसार पर अधिकार करने के लिए तीन भौगोलिक शक्तियों को जीतते हुए दर्शाया गया है, और फिर पोप-शासित रोम को पृथ्वी पर अधिकार करने के लिए तीन भौगोलिक शक्तियों को जीतते हुए दर्शाया गया है।

इस अध्याय में मूर्तिपूजक रोम का प्रथम उल्लेख पद चौदह में किया गया है, ताकि उसे उस प्रतीक के रूप में पहचाना जाए जो दर्शन को स्थापित करता है; परन्तु उसकी शक्ति में उन्नति का वर्णन पद सोलह तक नहीं किया गया है। सिकंदर महान का राज्य परमेश्वर के भविष्यद्वाणीपूर्ण वचन की पूर्ति में चार भागों में विभाजित हुआ, परन्तु वे चारों भाग शीघ्र ही दो प्रमुख विरोधियों में संगठित हो गए, जिन्हें भविष्यद्वाणी की उस कथा में, जो अध्याय के निष्कर्ष तक चलती है, या तो दक्षिण का राजा अथवा उत्तर का राजा कहा गया है। पद चौदह में रोम की उदित होती शक्ति का उल्लेख उस शक्ति के रूप में किया गया है जो दर्शन को स्थापित करने वाली थी, परन्तु जिन विषयों पर चर्चा की जा रही है वे सिकंदर के राज्य के अवशेषों के बीच के संघर्ष हैं, जैसा कि उत्तर और दक्षिण के राजाओं द्वारा निरूपित किया गया है।

पंद्रहवें पद में, वे दो राजा अभी भी अपने संघर्ष में लगे हुए हैं, और उत्तर का राजा हावी है। परन्तु सोलहवें पद में रोम आता है और पद कहता है, "परन्तु जो उसके विरुद्ध आता है," अर्थात् जब रोम उस उत्तरी राजा के विरुद्ध आता है, जो अभी-अभी दक्षिणी राजा पर प्रबल हो रहा था, तब उत्तर का राजा रोम के सामने ठहर नहीं सकेगा। रोम प्रबल होता है, और सोलहवें पद में रोम यहूदा की गौरवशाली भूमि में भी खड़ा होगा। सत्रहवें पद में रोम "अपने सारे राज्य की शक्ति के साथ प्रवेश करने के लिए अपना मुख लगाएगा।" उसने उस उत्तरी राजा को वश में कर लिया जो उसके सामने ठहर नहीं सका, फिर उसने यहूदा को अपने अधीन कर लिया, और फिर वह मिस्र में प्रवेश कर गया।

और उन दिनों में दक्षिण के राजा के विरुद्ध बहुत से उठ खड़े होंगे; और तेरे लोगों के लुटेरे भी दर्शन को स्थापित करने के लिए अपने आप को ऊँचा उठाएँगे, परन्तु वे गिर पड़ेंगे। सो उत्तर का राजा आएगा, घेराबंदी का बांध बाँधेगा, और सबसे किलेबंद नगरों को जीत लेगा; और दक्षिण की सेनाएँ उसका सामना न कर सकेंगी, न उसके चुने हुए लोग; और प्रतिरोध करने की कोई शक्ति भी न होगी। परन्तु जो उसके विरुद्ध आएगा, वह अपनी ही इच्छा के अनुसार करेगा, और कोई उसके सामने टिक न सकेगा; और वह महिमामय देश में खड़ा होगा, जिसे वह अपने हाथ से भस्म कर देगा। वह अपने सारे राज्य की शक्ति के साथ प्रवेश करने के लिए अपना मन लगाएगा, और धर्मनिष्ठ लोग उसके साथ होंगे; ऐसा ही वह करेगा: और वह उसे स्त्रियों की पुत्री देगा, उसे भ्रष्ट करने के लिए; परन्तु वह न तो उसकी ओर खड़ी होगी, और न ही उसकी होगी। दानिय्येल 11:14-17.

इन पदों में दर्शाई गई विजय दानिएल के आठवें अध्याय की पूर्ति है।

और उन में से एक से एक छोटा सा सींग निकला, जो अत्यन्त महान हो गया, दक्षिण की ओर, पूर्व की ओर, और मनभावने देश की ओर। दानिय्येल 8:9.

आयत नौ का छोटा सींग मूर्तिपूजक रोम है, और आयत नौ यह पहचानती है कि, अध्याय ग्यारह की आयत चौदह से सत्रह के अनुरूप, जैसे-जैसे मूर्तिपूजक रोम संसार पर नियंत्रण स्थापित करता गया, वह तीन भौगोलिक इकाइयों को जीत लेगा। वे इकाइयाँ थीं: दक्षिण (मिस्र), पूरब (सीरिया, उत्तर का राजा) और मनोरम देश (यहूदा)। आयत 16 और 17 का इतिहास आयत 40 से 43 में आधुनिक रोम की ऐतिहासिक तीन-चरणीय विजय का प्रतिरूप प्रस्तुत करता है, क्योंकि जैसा कि सिस्टर व्हाइट ने कहा है, "इस भविष्यवाणी की पूर्ति में जो इतिहास घटित हुआ है, उसका बहुत भाग दोहराया जाएगा।"

"यद्यपि मिस्र उत्तर के राजा अन्तियोकुस के सामने खड़ा न रह सका, तथापि अन्तियोकुस रोमियों के सामने खड़ा न रह सका, जो अब उसके विरुद्ध आ पहुँचे थे। कोई भी राज्य इस उदित होती शक्ति का और अधिक प्रतिरोध

करने में समर्थ न रहे। जब पोम्पेय ने ईसा-पूर्व 65 में अन्तियोकुस एशियाटिकुस को उसकी संपत्तियों से वंचित कर दिया और सीरिया को एक रोमी प्रान्त बना दिया, तब सीरिया जीत लिया गया और रोमी साम्राज्य में मिला लिया गया।”

“उसी शक्ति को पवित्र भूमि में भी खड़ा होना था, और उसे भस्म कर देना था। रोम ईसा-पूर्व 162 में परमेश्वर की प्रजा, यहूदियों, के साथ संधि के द्वारा संबद्ध हुआ, और उसी तिथि से वह भविष्यवाणी की समय-सारिणी में एक प्रमुख स्थान रखता है। तथापि, उसने यहूदिया पर वास्तविक विजय के द्वारा अधिकार-क्षेत्र ईसा-पूर्व 63 तक प्राप्त नहीं किया; और तब वह निम्नलिखित रीति से हुआ।

पॉटस के राजा मिथ्रिडेट्स के विरुद्ध अपने अभियान से लौटने पर, पॉम्पी के सामने यहूदिया के सिंहासन के लिए दो दावेदार, हिरकैनस और एरिस्टोबुलस, संघर्ष कर रहे थे। उनका मामला पॉम्पी के समक्ष आया, जिसने शीघ्र ही एरिस्टोबुलस के दावों की अन्यायपूर्णता समझ ली, पर उसने अपने लंबे समय से वांछित अरब के अभियान के बाद ही इस विषय में निर्णय स्थगित करना चाहा, यह वादा करते हुए कि वह तब लौटकर उनके मामले को जैसा न्यायसंगत और उचित प्रतीत होगा, वैसा निपटाएगा। पॉम्पी की वास्तविक भावना भाँपकर, एरिस्टोबुलस शीघ्र ही यहूदिया लौट गया, अपने लोगों को हथियारबंद किया, और दृढ़ रक्षा की तैयारी की, यह निश्चय करके कि किसी भी कीमत पर वह वह ताज बनाए रखेगा, जिसके किसी और के पक्ष में निर्णय हो जाने की उसे आशंका थी। पॉम्पी ने उस भगोड़े का निकट से पीछा किया। जब वह यरूशलेम के पास पहुँचा, तो एरिस्टोबुलस, अपनी चाल पर पछताने लगा, उससे मिलने बाहर आया और पूर्ण अधीनता तथा बड़ी धनराशि का वचन देकर मामला सुलझाने का प्रयास किया। पॉम्पी ने यह प्रस्ताव स्वीकार करते हुए, धन प्राप्त करने के लिए सैनिकों की एक टुकड़ी के नेतृत्व में गैबिनियस को भेजा। परन्तु जब वह उप सेनानायक यरूशलेम पहुँचा, तो उसने पाया कि फाटक उसके लिए बंद थे, और दीवारों के ऊपर से उसे यह बता दिया गया कि नगर उस समझौते पर कायम नहीं रहेगा।

इस प्रकार की छल-कपट को दंडमुक्त नहीं रहने देने हेतु, पोम्पेय ने एरिस्टोबुलस—जिसे वह अपने साथ रोके हुए था—को बेड़ियों में जकड़ दिया, और तुरंत अपनी पूरी सेना के साथ यरूशलेम पर कूच कर दिया। एरिस्टोबुलस के समर्थक उस स्थान की रक्षा के पक्ष में थे; हाइर्कानुस के समर्थक फाटकों को खोल देने के। दूसरे पक्ष की संख्या अधिक होने और वही हावी रहने से, पोम्पेय को नगर में निर्बाध प्रवेश दे दिया गया। तब एरिस्टोबुलस के अनुयायी मंदिर पर्वत पर जा डटे; उस स्थान की रक्षा का उनका संकल्प उतना ही दृढ़ था जितना उसे अधीन करने का पोम्पेय का। तीन महीनों के अंत में दीवार में इतनी बड़ी सेंध कर दी गई कि धावा बोला जा सके, और उस स्थान पर तलवार के बल पर कब्जा कर लिया गया। इसके बाद हुए भयानक संहार में बारह हजार व्यक्ति मारे गए। इतिहासकार लिखता है कि यह अत्यंत मर्मस्पर्शी दृश्य था—उस समय ईश-सेवा में लीन पुरोहित शांत हाथों और अडिग संकल्प के साथ अपना अभ्यस्त कार्य करते रहे, मानो चारों ओर की उन्मत्त हलचल से अनजान हों, जबकि उनके चारों तरफ उनके अपने लोग मारे जा रहे थे, और अक्सर उनके अपने रक्त का भी मिश्रण उनके बलिदानों के रक्त से हो जाता था।

युद्ध का अंत कर देने के बाद, पॉम्पेय ने यरूशलेम की दीवारों को ध्वस्त कर दिया, कई नगरों को यहूदिया के अधिकार क्षेत्र से हटाकर सीरिया के अधिकार क्षेत्र में दे दिया, और यहूदियों पर खिराज लगाया। इस प्रकार पहली बार विजय के माध्यम से यरूशलेम उस शक्ति के हाथों में सौंपा गया जो 'गौरवभूमि' को अपने लोहे के शिकंजे में तब तक जकड़े रखने वाली थी, जब तक वह उसे पूरी तरह नष्ट न कर दे।

'पद 17. वह अपने सारे राज्य की शक्ति के साथ प्रवेश करने का भी निश्चय करेगा, और उसके साथ सीधे-सच्चे लोग होंगे; वह ऐसा ही करेगा: और वह उसे स्त्रियों की पुत्री देगा, उस बेटी को भ्रष्ट करने के उद्देश्य से; परन्तु वह न तो उसके पक्ष में ठहरेगी और न उसकी होगी.'

"बिशप न्यूटन इस पद के लिए एक अन्य पाठ प्रस्तुत करते हैं, जो अर्थ को अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करता प्रतीत होता है, इस प्रकार: 'वह संपूर्ण राज्य में बलपूर्वक प्रवेश करने का भी दृढ़ निश्चय करेगा।' पद 16 हमें

रोमनों की सीरिया और यहूदिया पर विजय तक ले आया। रोम इससे पहले ही मकदूनिया और ग्रेस पर विजय प्राप्त कर चुका था। अलेक्जेंडर के 'संपूर्ण राज्य' में से अब केवल मिस्र ही शेष था, जो अभी तक रोमी सत्ता के अधीन नहीं लाया गया था; और उसी सत्ता ने अब उस देश में बलपूर्वक प्रवेश करने का दृढ़ निश्चय कर लिया था।" Uriah Smith, Daniel and the Revelation, 258-260.

हम इन लेखों में पहले ही एक से अधिक बार यह ध्यान दिला चुके हैं कि दानिय्येल 11 की पद 30 और 31, पद 40 और 41 के साथ सामंजस्य रखती हैं, और पद 30 तथा 31 का इतिहास तीन सींगों के उखाड़ फेंके जाने के साथ भी सामंजस्य रखता है।

मैं उन सींगों पर विचार कर रहा था; और देखो, उनके बीच से एक और छोटा सींग उगा, जिसके सामने पहले के तीन सींग जड़ से उखाड़ दिए गए; और देखो, उस सींग में मनुष्य की आँखों के समान आँखें थीं, और एक मुख था जो बड़ी-बड़ी बातें बोल रहा था। और उसके सिर पर जो दस सींग थे, और उस दूसरे के विषय में जो उठा, जिसके सामने तीन गिर पड़े—हाँ, उसी सींग के बारे में, जिसमें आँखें थीं और एक मुख था जो अत्यन्त बड़ी-बड़ी बातें बोलता था, जिसका रूप अपने साथियों से अधिक प्रबल था। दानिय्येल 7:8, 20.

जैसे दानिय्येल अध्याय आठ, पद नौ, उन तीन भौगोलिक क्षेत्रों में की गई विजयों का प्रतिनिधित्व करता है जिनके द्वारा मूर्तिपूजक रोम सिंहासन पर स्थापित हुआ, वैसे ही सींगों का उखाड़ा जाना (जो हेरुली, ओस्ट्रोगोथ्स और वैंडल्स का प्रतिनिधित्व करते हैं) उन तीन भौगोलिक विजयों का प्रतिनिधित्व करता था जिनके द्वारा पापाई रोम सिंहासन पर स्थापित हुआ। ये दोनों इतिहास दानिय्येल अध्याय ग्यारह के पद चालीस से तैंतालीस तक से मेल खाते हैं, और तीन सींगों का उखाड़ा जाना पद तीस और इकतीस के इतिहास से मेल खाता है।

'पद 8. मैं उन सींगों पर विचार कर रहा था, और देखो, उनके बीच से एक और छोटा सींग निकला, जिसके सामने पहले के सींगों में से तीन मूल से उखाड़ दिए गए; और देखो, उस सींग में मनुष्य की आँखों के समान आँखें थीं, और एक मुख जो बड़ी बातें बोलता था.'

दानियेल ने उन सींगों पर विचार किया। उनके बीच किसी अजीब हलचल के संकेत दिखाई दिए। एक छोटा सींग (शुरू में छोटा, पर बाद में अपने साथियों से अधिक बलवान) उनके बीच उभरकर ऊपर आ गया। वह अपने लिए चुपचाप एक जगह ढूँढ़कर उसे भर लेने से संतुष्ट नहीं था; उसे दूसरों में से कुछ को हटाकर उनकी जगहें हथियानी थीं। उसके सामने तीन राज्य उखाड़ दिए गए। यह छोटा सींग, जैसा कि आगे हमें अधिक विस्तार से देखने का अवसर मिलेगा, पोपतंत्र था। उसके सामने जो तीन सींग उखाड़े गए, वे हेरुली, ओस्ट्रोगोथ, और वैंडल थे। और उन्हें उखाड़े जाने का कारण यह था कि वे पोप के धर्माधिकारी तंत्र की शिक्षाओं और दावों का विरोध करते थे, और इस प्रकार कलीसिया में रोम के बिशप की सर्वोच्चता का भी।

"और 'इस सींग में मनुष्य की आँखों के समान आँखें थीं, और एक मुँह जो बड़ी-बड़ी बातें करता था,' वे आँखें पापल पदानुक्रम के चातुर्य, तीक्ष्ण अंतर्दृष्टि, कुटिलता और दूरदर्शिता का उपयुक्त प्रतीक हैं; और बड़ी-बड़ी बातें करने वाला वह मुँह, रोम के बिशपों के घमंडी दावों का उपयुक्त प्रतीक है।" Uriah Smith, Daniel and the Revelation, 132-134.

बाइबल की भविष्यद्वाणी के दर्शन को स्थापित करने वाला रोम ही है, और विशेष रूप से दानिय्येल अध्याय ग्यारह के दर्शन को। उस अध्याय में भविष्यद्वाणी के इतिहास का बहुत-सा भाग, जो मिलेराइट आंदोलन से पहले पूरा हो चुका था, दानिय्येल ग्यारह की अंतिम छह आयतों में पुनः दोहराया जाना था। उन तीन भौगोलिक बाधाओं का पराजित किया जाना, जिन्होंने मूर्तिपूजक और पोपीय—दोनों प्रकार के रोम को सिंहासन पर स्थापित किया, अध्याय ग्यारह में प्रस्तुत किया गया है, और ये दोनों प्रस्तुतिकरण उस समय का प्रतिरूप हैं जब आधुनिक रोम फिर से सिंहासन पर स्थापित होता है। दर्शन को स्थापित करने वाला रोम ही है, और पौलुस यह पहचान कराता है कि पोपीय रोम अपने समय में प्रकट किया जाता है।

किसी भी प्रकार से कोई तुम्हें धोखा न दे; क्योंकि वह दिन नहीं आएगा, जब तक पहले धर्मत्याग न हो जाए, और पाप का मनुष्य, विनाश का पुत्र, प्रकट न हो जाए; जो विरोध करता है और अपने आप को हर उस से, जिसे परमेश्वर कहा जाता है, या जिसकी उपासना की जाती है, ऊँचा उठाता है; ताकि वह परमेश्वर के समान परमेश्वर के मंदिर में बैठकर अपने आप को परमेश्वर ठहराए। क्या तुम स्मरण नहीं करते कि जब मैं अभी तुम्हारे साथ था, तब मैंने तुम्हें ये बातें बताई थीं? और अब तुम जानते हो कि क्या उसे रोक रहा है, ताकि वह अपने समय पर प्रकट हो सके। 2 थिस्सलुनीकियों 2:3-6।

सन 538 में पापसी बाइबल की भविष्यद्वाणी के पाँचवें राज्य के रूप में सिंहासन पर बैठी, और जो लोग पद 6 पर विचार करते हैं, वे निस्संदेह यह मान लेंगे कि पौलुस का अर्थ है कि "पापसी 538 में प्रकट होगी।" यह सही भी हो सकता है, लेकिन कम से कम यह उस बात का द्वितीयक सत्य है जिसे पौलुस पहचान रहा था। पौलुस, अन्य सभी भविष्यद्वाक्ताओं की तरह, अपने समय से अधिक अंत के दिनों के बारे में बोल रहा है। वह इस बात का संकेत कर रहा था कि पापसी भविष्यद्वाणी के माध्यम से कैसे प्रकट होगी, क्योंकि एक भविष्यद्वाक्ता के रूप में वह अन्य सभी भविष्यद्वाक्ताओं के साथ सहमत था। पंक्ति दर पंक्ति, जिनके पास दर्शन नहीं है वे नष्ट हो जाते हैं, और जिनके पास दर्शन नहीं है, उनके पास दर्शन इसलिए नहीं है क्योंकि वे नहीं जानते कि दर्शन को स्थापित क्या करता है। यह जानना कि दर्शन की स्थापना रोम करता है, जीवन-मरण का प्रश्न है। पौलुस, अन्य भविष्यद्वाक्ताओं के साथ सहमति में, यह पहचान रहा है कि पापल रोम, जो अंतिम दिनों का रोम है, को प्रकट करने वाली बात "उसका समय" है। रोम से संबद्ध भविष्यद्वाणी का "समय" ही यह प्रकट करता है कि रोम क्या है और कौन है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के नाम अपनी दूसरी पत्री में उस महान धर्मत्याग की भविष्यवाणी की जो पापाई सत्ता की स्थापना का कारण बनेगा। उसने कहा कि मसीह का दिन नहीं आएगा, "जब तक पहले धर्मत्याग न हो जाए, और पाप का मनुष्य, अर्थात् विनाश का पुत्र, प्रकट न हो जाए; जो विरोध करता है और अपने आप को हर एक से जो परमेश्वर कहलाता है या जिसकी पूजा की जाती है, बढ़ाता है; यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मंदिर में परमेश्वर की नाई बैठता है और अपने आप को परमेश्वर दिखाता है।" और आगे प्रेरित अपने भाइयों को चेतावनी देता है कि "अधर्म का भेद तो पहले से ही कार्य कर रहा है।" 2 थिस्सलुनीकियों 2:3, 4, 7। उसी आरंभिक काल में ही उसने देखा कि कलीसिया में धीरे-धीरे ऐसी भूलें घुसपैठ कर रही हैं जो पापाई सत्ता के विकास का मार्ग तैयार करेंगी।

धीरे-धीरे, पहले चोरी-छिपे और मौन रूप से, और फिर जैसे-जैसे वह शक्ति में बढ़ा और मनुष्यों के मनो पर अधिकार करता गया, 'अधर्म का भेद' अपने धोखापूर्ण और ईशनिंदात्मक कार्य को आगे बढ़ाता रहा। लगभग अनजाने में ही मूर्तिपूजा के रीति-रिवाज मसीही कलीसिया में प्रवेश कर गए। समझौते और अनुरूपता की भावना कुछ समय तक उन भयंकर उत्पीड़नों से रोकी गई जिनका सामना कलीसिया ने मूर्तिपूजक शासन के अधीन किया। परन्तु जब उत्पीड़न थम गया और मसीही धर्म राजाओं के दरबारों और महलों में प्रवेश कर गया, तब उसने मसीह और उसके प्रेरितों की विनम्र सरलता को छोड़कर मूर्तिपूजक याजकों और शासकों के आडंबर और घमण्ड को धारण कर लिया; और परमेश्वर की आज्ञाओं के स्थान पर उसने मानवीय सिद्धांतों और परंपराओं को स्थापित कर दिया। चौथी शताब्दी के आरम्भ में कॉन्स्टैन्टाइन के नाममात्र के धर्मपरिवर्तन ने बड़ा हर्ष उत्पन्न किया; और संसार, धार्मिकता के एक रूप का आवरण ओढ़े, कलीसिया में प्रवेश कर गया। अब भ्रष्टाचार का कार्य तीव्रता से आगे बढ़ा। मूर्तिपूजा, पराजित दिखाई देती हुई भी, विजेता बन गई। उसकी आत्मा ने कलीसिया पर नियन्त्रण कर लिया। उसकी शिक्षाएँ, अनुष्ठान और अन्धविश्वास मसीह के कहलाने वाले अनुयायियों के विश्वास और उपासना में मिला दिए गए।

बहुदेववाद और ईसाई धर्म के बीच इस समझौते के परिणामस्वरूप भविष्यवाणी में बताए गए 'पाप के मनुष्य' का विकास हुआ, जो परमेश्वर का विरोध करता है और स्वयं को परमेश्वर से ऊपर उठाता है। झूठे धर्म की वह विशालकाय प्रणाली शैतान की शक्ति की एक उत्कृष्ट कृति है—उसके इस प्रयास का स्मारक कि वह स्वयं को

सिंहासन पर बैठाकर अपनी इच्छा के अनुसार पृथ्वी पर शासन करे। The Great Controversy, 49, 50.